॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कृष्णयजुर्वेदीय

चाक्षुषोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

अब नेत्ररोगका हरण करनेवाली पाठमात्रसे सिद्ध होनेवाली चाक्षुषी विद्याकी व्याख्या करते हैं, जिससे समस्त नेत्ररोगोंका सम्पूर्णतया नाश हो जाता है और नेत्र तेजयुक्त हो जाते हैं। उस चाक्षुषी विद्याके ऋषि अहिर्बुध्न्य हैं, गायत्री छन्द है, सूर्यभगवान् देवता हैं; नेत्ररोगकी निवृत्तिके लिये इसका जप होता है—यह विनियोग है*।

चाक्षुषी विद्या

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति॥

ॐ (भगवान्‌का नाम लेकर कहे)। हे चक्षुके अभिमानी सूर्यदेव! आप चक्षुमें चक्षुके तेजरूपसे स्थिर हो जायँ। मेरी रक्षा करें! रक्षा करें! मेरे आँखके रोगोंका शीघ्र शमन करें, शमन करें। मुझे अपना सुवर्ण-जैसा तेज दिखला दें, दिखला दें। जिससे मैं अंधा न होऊँ (कृपया) वैसे ही उपाय करें, उपाय करें। मेरा कल्याण करें, कल्याण करें। दर्शन-शक्तिका अवरोध करनेवाले मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़से उखाड़ दें, जड़से उखाड़ दें। ॐ (सच्चिदानन्दस्वरूप) नेत्रोंको तेज प्रदान करनेवाले दिव्यस्वरूप भगवान् भास्करको नमस्कार है। ॐ करुणाकर अमृतस्वरूपको नमस्कार है। ॐ सूर्यभगवान्‌को नमस्कार है। ॐ नेत्रोंके प्रकाश भगवान् सूर्यदेवको नमस्कार है। ॐ आकाशविहारीको नमस्कार है। परम श्रेष्ठस्वरूपको नमस्कार है। ॐ (सबमें क्रिया-शक्ति उत्पन्न करनेवाले) रजोगुणरूप सूर्यभगवान्‌को नमस्कार है। (अन्धकारको सर्वथा अपने अंदर समा लेनेवाले) तमोगुणके आश्रयभूत भगवान् सूर्यको नमस्कार है। हे भगवन्! मुझको असत्‌से सत्‌की ओर ले चलिये। अन्धकारसे प्रकाशकी ओर ले चलिये। मृत्युसे अमृतकी ओर ले चलिये। उष्णस्वरूप भगवान् सूर्य शुचिरूप हैं। हंसस्वरूप भगवान् सूर्य शुचि तथा अप्रतिरूप हैं—उनके तेजोमय स्वरूपकी समता करनेवाला कोई नहीं है। जो ब्राह्मण इस चाक्षुष्मती विद्याका नित्य पाठ करता है, उसको नेत्रसम्बन्धी कोई रोग नहीं होता। उसके कुलमें कोई अंधा नहीं होता। आठ ब्राह्मणोंको इस विद्याका दान करनेपर—इसका

---

* तस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगः।

ग्रहण करा देनेपर इस विद्याकी सिद्धि होती है।*

जो सच्चिदानन्दस्वरूप हैं, सम्पूर्ण विश्व जिनका रूप है, जो किरणोंसे सुशोभित एवं जातवेदा (भूत आदि तीनों कालोंकी बातको जाननेवाले) हैं, जो ज्योतिःस्वरूप, हिरण्मय (सुवर्णके समान कान्तिमान्) पुरुषके रूपमें तप रहे हैं, इस सम्पूर्ण विश्वके जो एकमात्र उत्पत्तिस्थान हैं, उन प्रचण्ड प्रतापवाले भगवान् सूर्यको हम नमस्कार करते हैं। ये सूर्यदेव समस्त प्रजाओं (प्राणियों)-के समक्ष उदित हो रहे हैं।

ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

ॐ षड्विध ऐश्वर्यसे सम्पन्न भगवान् आदित्यको नमस्कार है। उनकी प्रभा दिनका भार वहन करनेवाली है, दिनका भार वहन करनेवाली है। हम उन भगवान्‌के लिये उत्तम आहुति देते हैं। जिन्हें मेधा अत्यन्त प्रिय है, वे ऋषिगण उत्तम पंखोंवाले पक्षीके रूपमें भगवान् सूर्यके पास गये और इस प्रकार प्रार्थना करने लगे—'भगवन्! इस अन्धकारको छिपा दीजिये, हमारे नेत्रोंको प्रकाशसे पूर्ण कीजिये तथा तमोमय बन्धनमें बँधे हुए-से हम सब प्राणियोंको अपना दिव्य प्रकाश देकर मुक्त कीजिये। पुण्डरीकाक्षको† नमस्कार है। पुष्करेक्षणको नमस्कार है। निर्मल नेत्रोंवाले—अमलेक्षणको नमस्कार है। कमलेक्षणको नमस्कार है। विश्वरूपको नमस्कार है। महाविष्णुको नमस्कार है।'

॥ कृष्णयजुर्वेदीय चाक्षुषोपनिषद् समाप्त ॥

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

परमात्माका चिन्तन करो

निद्राया लोकवार्त्तायाः शब्दादेरात्मविस्मृतेः।
क्वचिन्नावसरं दत्त्वा चिन्तयात्मानमात्मनि॥ (अध्यात्मोपनिषद् ५)

नींद, लोकचर्चा, इन्द्रियोंके शब्दादि विषय और आत्मविस्मृति (परमात्माका स्मरण न करना)—इन (चारों)-को कहीं तनिक-सा भी अवसर न देकर मनसे निरन्तर आत्मा (परमात्मा)-का चिन्तन करो।

---

* चाक्षुषी (नेत्र)-उपनिषद्की शीघ्र फल देनेवाली विधि—

(लेखक—पं० श्रीमुकुन्दवल्लभजी मिश्र, ज्यौतिषाचार्य)

नेत्ररोगसे पीड़ित श्रद्धालु साधकको चाहिये कि प्रतिदिन प्रातःकाल हरिद्रा (हल्दी)-से अनारकी शाखाकी कलमके द्वारा काँसेके पात्रमें निम्नलिखित बत्तीसे यन्त्रको लिखे—

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

'मम चक्षूरोगान् शमय शमय'

फिर उसी यन्त्रपर ताँबेकी कटोरीमें चतुर्मुख (चारों ओर चार बत्तियोंका) घीका दीपक जलाकर रख दे। तदनन्तर गन्ध-पुष्पादिसे यन्त्रका पूजन करे। फिर पूर्वकी ओर मुख करके बैठे और हरिद्रा (हल्दी)-की मालासे 'ॐ ह्रीं हंसः' इस बीजमन्त्रकी ६ मालाएँ जपकर नेत्रोपनिषद्के कम-से-कम बारह पाठ करे। पाठके पश्चात् फिर उपर्युक्त बीजमन्त्रकी ५ मालाएँ जपे। तदनन्तर सूर्यभगवान्‌को श्रद्धापूर्वक अर्घ्य देकर प्रणाम करे और मनमें यह निश्चय करे कि मेरा नेत्ररोग शीघ्र ही नष्ट हो जायगा।

ऐसा करते रहनेसे इस उपनिषद्का नेत्ररोगनाशक अद्भुत प्रभाव बहुत शीघ्र देखनेमें आता है।

† 'पुण्डरीकाक्ष', 'पुष्करेक्षण' और 'कमलेक्षण'—इन तीनों नामोंका एक ही अर्थ है—कमलके समान नेत्रोंवाले भगवान्।